

## क. क्षमा पर विवाद। मरकुस 2:1-12.

- ❖ जब यीशु कफरनहूम में पतरस के घर लौटा, तो बहुत से लोग उसकी सुनने के लिये आये (मरकुस 2:1-2)। चार दोस्त उसके पास आए ताकि यीशु उनके लकवाग्रस्त दोस्त को ठीक कर सके, लेकिन वे उसके करीब नहीं पहुंच सके। वे उसे यीशु के पास लाने का दृढ़ निश्चय करके छत पर गए और उसे नीचे उतारने के लिए छत खोलकर एक रास्ता बनाया। यीशु का भाषण बाधित हो गया, और हर कोई चुप रहा, यह देखने की प्रतीक्षा में कि यीशु क्या करेगा (मरकुस 2:3-4)।
- ❖ "तेरे पाप क्षमा हुए" (मरकुस 2:5)। लकवाग्रस्त व्यक्ति कह सकता था: "मुझे चलने की जरूरत है।" लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। यीशु ने उसकी बीमारी की जड़ को ठीक कर दिया। उसे फिर से न चल पाने की परवाह नहीं थी, बल्कि उस क्षमा की परवाह थी जिसने उसकी आत्मा को शांति दी।
- ❖ शास्त्रियों के लिए, यह ईशनिंदा थी (सच होता, यदि यीशु परमेश्वर नहीं होता)। यह प्रदर्शित करने के लिए कि उसमें क्षमा करने की शक्ति है, यीशु ने लकवे के रोगी को ठीक किया (मरकुस 2:8-11)।
- ❖ लोगों ने यीशु को पापों को क्षमा करने की शक्ति देने के लिए परमेश्वर की स्तुति की (मरकुस 2:12; मत्ती 9:8)। लकवाग्रस्त व्यक्ति चला; लेकिन शास्त्री अंधे रह गए, यह देखने में असमर्थ थे कि यीशु उनके मन को पढ़ सकता है, पापी को क्षमा कर सकता है, और उसे चंगाई प्रदान कर सकता है।

## ख. भोजन पर विवाद। मरकुस 2:13-22.

- ❖ यीशु ने न केवल चुंगी लेनेवाले के घर में खाना खाया, बल्कि उसने अपने आप को उसके जैसे कई लोगों से घेर लिया। (मरकुस 2:15) आलोचकों ने अवसर नहीं गँवाया: "यह क्या है, कि वह चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ खाता पीता है?" (मरकुस 2:16)।
- ❖ यीशु ने तार्किक रूप से उनका खंडन किया: यहां से बेहतर मुझे पापियों को बचाने के लिए अवसर कहाँ मिलेगा? (मरकुस 2:17) इसके अतिरिक्त, उसने उन्हें अपनी भावनाओं की जांच करने की चुनौती दी। उन्हें प्रेम करना सीखने की आवश्यकता थी (मत्ती 9:12-13)।
- ❖ प्रेम करना सीखना तो दूर, फरीसियों ने यूहन्ना के शिष्यों को उसकी आलोचना में शामिल होने के लिए उकसाया: "यूहन्ना के चेले और फरीसियों के चेले क्यों उपवास रखते हैं, परन्तु तेरे चेले उपवास नहीं रखते?" (मरकुस 2:18)
- ❖ यीशु की प्रतिक्रिया दृष्टान्तों के रूप में आयी:
  - विवाह का दृष्टान्त (मरकुस 2:19-20)। विवाह में कोई कैसे उपवास कर सकता है? दूल्हा यीशु है; मेहमान, शिष्य हैं। जब यीशु मर गया और पुनर्जीवित हो गया, तब उसके शिष्यों को उपवास करने की आवश्यकता थी।
  - नये और पुराने का दृष्टान्त (मरकुस 2:21-22)। यीशु की जीवित शिक्षाओं का परंपरा की मृत शिक्षाओं में कोई स्थान नहीं था; और इसके विपरीत भी।

## ग. सब्त पर विवाद। मरकुस 2:23-3:6.

- ❖ अनाज हाथ में लेकर और उसे खाने के लिए उसकी भूसी हटाकर, शिष्यों ने सब्त के दिन तीन निषिद्ध कार्य किए: काटना; कूटना; और फटकना। (मरकुस 2:23-24; मत्ती 12:1-2)।
  - यीशु की प्रतिक्रिया: क्या तुम्हें याद नहीं है कि जब दाऊद भूखा था, उसने पवित्र रोटी खाई थी, जिसे केवल याजक ही खा सकते थे? (मरकुस 2:25-26)।
- ❖ बाद में, यीशु ने एक और "कार्य" किया जो 39 में शामिल नहीं था, लेकिन जिसे सब्त का उल्लंघन भी माना गया था: चंगाई (मरकुस 3:1-3)।
  - यीशु की प्रतिक्रिया: "सब्त के दिन क्या उचित है: भला करना या बुरा करना, प्राण बचाना या मारना?" (मरकुस 3:4)।
- ❖ अंततः, यीशु सब्त के दिन का प्रभु है, और उसने इसे हमारी भलाई के लिए हमें दिया है (मरकुस 2:27-28)।
- ❖ अजीब बात यह है कि, सरगर्म सब्त के पालनकर्ताओं ने एक हत्या की साजिश रची (मरकुस 3:6)।

## घ. यीशु के बारे में विवादास्पद प्रश्न:

### ❖ वह किस शक्ति से आश्चर्य कर्म करता है? मरकुस 3:22-30.

- मरकुस यीशु के परिवार के बारे में एक कहानी शुरू करता है, लेकिन फरीसियों के साथ एक विवाद का वर्णन करने के लिए उसे बीच में ही रोक देता है। बाद में, वह पहली कहानी पर लौटेगा। इस पैटर्न का उपयोग मरकुस द्वारा कई अवसरों पर दो समान कहानियों को जोड़ने के लिए किया जाता है, जिसमें केंद्रीय कहानी को सबसे महत्वपूर्ण बताया गया है।
  - (1) मरकुस 3:20-21 यीशु का परिवार उसकी तलाश करता है
  - (2) मरकुस 3:22-30 फरीसियों का आरोप
  - (3) मरकुस 3:31-35 यीशु का परिवार उसकी तलाश करता है
- इस मामले में, महत्वपूर्ण कहानी शास्त्रियों का यह आरोप है कि वह कौन सी शक्ति थी जिसने यीशु को दुष्टात्माओं को बाहर निकालने में सहायता की (मरकुस 3:22)।
- फिर, यीशु अपने विरुद्ध आरोपों की बेतुकीता को प्रदर्शित करने के लिए एक दृष्टान्त का उपयोग करता है (मरकुस 3:23-27)। यीशु बलवन्त आदमी (शैतान) के घर में प्रवेश करता है, उसे बांधता है, और इस तरह उसकी संपत्ति लूट सकता है (दुष्टात्मा ग्रस्त को मुक्त कर सकता है)।
- वह पवित्र आत्मा के कार्य का श्रेय शैतान को देने के खतरे के बारे में चेतावनी भी देता है (मरकुस 3:28-30)।

### ❖ क्या यीशु पागल है? मरकुस 3:20-21, 31-35.

- यीशु के परिवार को ऐसा क्यों लगा कि उसका चित ठिकाने नहीं है। (मरकुस 3:20-21)?
- एक संक्षिप्त विराम के बाद, मरकुस फिर से कहानी शुरू करता है, उसके रिश्तेदारों का परिचय देता है जो यीशु की तलाश कर रहे थे: उसकी माँ और उसके भाई (मरकुस 3:31)।
- यीशु की ओर से अपने परिवार के प्रति क्या ही लापरवाही! (मरकुस 3:32-33) लेकिन जो दिखता है धोखा हो सकता है। उसकी माँ और भाई गलत थे। उस समय अपना काम छोड़कर उनकी देखभाल करना उसके विशेष कार्य और स्वयं के लिए हानिकारक था।
- शारीरिक संबंधों से भी अधिक महत्वपूर्ण वे बंधन हैं जो यीशु को उसके आध्यात्मिक परिवार के साथ जोड़ते हैं।" (मरकुस 3:35)।